इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखक/संपादक के व्यक्तिगत हैं। इस पुस्तक में व्यक्त विचारों से किसी भी प्रकार की हानि होने के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशक का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

सौजन्य से :-
सरस्वती साहित्य संस्थान (पंजी.)
चरखी-दादरी-127306 (हरियाणा)

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस पुस्तक के किसी भी अंश का किसी भी रूप में चाहे इलेक्ट्रॉनिक अथवा मैकेनिक तकनीक से, फोटोकॉपी द्वारा या अन्य किसी प्रकार से पुनः प्रकाशन अथवा पुनः मुद्रण, लेखक/प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

ISBN : 978-93-91161-15-6

मूल्य : 695/-

प्रथम संस्करण : 2021 (साहित्यभूमि)

© सुरक्षित

प्रकाशक : **साहित्यभूमि**
(प्रकाशक एवं वितरक)
एन-3/5ए, मोहन गार्डन,
नई दिल्ली-110059
दूरभाष : +91-7290973151, 8383863238
ई-मेल : sahityabhoomi@gmail.com

लेआउट : कॉन्वेक्स पब्लिशिंग सोल्यूशन, नई दिल्ली

Adhunikta Ke Pariprekshya Men Samajik Sarokar aur Sanskrit Sahitya ki Upayogita by Dr. Kailashchand Sharma 'Shanki'

आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक सरोकार और संस्कृत साहित्य की उपयोगिता

संपादक
डॉ. कैलाशचन्द शर्मा 'शंकी'
उप. संपादक
डॉ. विनीता पाण्डेय एवं डॉ. सरिता देवी शुक्ला

अनुक्रम

वैदिक वाङ्मय में नारी की भूमिका
प्रो. (डॉ.) केवल कृष्ण मल्होत्रा 9

साहित्य और स्त्री : मैत्रेयी पुष्पा के संदर्भ में
पूनम जैन 15

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में विद्यमान भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण संरक्षण की भावना का वर्तमान समय में प्रासंगिकता
डॉ. सिकन्दर लाल 25

दुष्यन्त कुमार की गजलों में व्यक्त मानवमन की छटपटाहट
डॉ. अ. मिश्रा 38

फेसबुक, ट्विटर पर उभरता साहित्य : दशा और दिशा
डॉ. गुलाब चंद पटेल 46

वेदों में स्त्रियों का स्थान
निशी राघव 52

धर्म की आड़ में नारी शोषण
कमलेश शर्मा 56

लुप्त होते पौराणिक व्रत-काम्यकर्मों के पूरक
मदन मोहन पुरोहित व डॉ. नन्दिता सिंघवी 68

डॉ. पुष्पा बंसल कृत रामकथा में चित्रित स्त्री-अस्मिता
सुमन रानी 75

आधुनिक संदर्भ में लोकसाहित्य और संस्कृति की अवधारणा
डॉ. घनश्याम भारती 81

वेदों/उपनिषद का जीवन में महत्त्व
परमीत कौर 85

कृणचन्द्र 'भिक्खु' के कथा-साहित्य म. विघटित मानवीय-मूल्यों का चित्रण
डॉ. बिजेन्द्र कुमार 90

गीतांजलि श्री की कहानियों म. नारी चेतना
पूजा यादव 100

कृष्णचन्द्र 'भिक्खु' के कथा-साहित्य म. विघटित मानवीय-मूल्यों का चित्रण

डॉ. बिजेन्द्र कुमार
सहायक प्राध्यापक, हिंदी-विभाग,
आर.के.एस.डी. (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय,
कैथल, हरियाणा-136027

भूमिका

मानव जीवन निश्चय ही, एक ऐसी अद्भुत और आकर्षक वाटिका है जिसम. विभिन्न रंगों, आकारों और मौसमों के मानव-मूल्य रूपी फूल निरंतर खिलते हैं, झड़ते हैं, पुनः नया जीवन पाते हैं। यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है जिसम. एक और पारंपरिक मूल्यों का विघटन होता है तो दूसरी ओर नए मूल्यों का आविर्भाव होता है। इसलिए मानव जीवन और समाज के बिगड़ने के स्तर पर मूल्यों की उत्पत्ति और विघटन की प्रक्रिया को मूल्य विघटन या मूल्य संक्रमण कहा जाता है। डॉ. धर्मवीर भारती ने ठीक ही कहा है कि "इस मूल्य विघटन या संक्रमण की प्रक्रिया और परिवर्तन की विधायक शक्ति मानव म. निहित है।" मूल्यों की निर्धारित प्रक्रिया वस्तुतः मानवीय चेतना से जुड़ी है, जिसके परिप्रेक्ष्य म. सामाजिक चेतना के संसर्ग म. नए मूल्यों की स्थापना और नए मूल्यों की स्थिरता के बाद विघटन का क्रम सन्निहित रहता है, जिस पर मुख्य रूप से प्रवेश की विभिन्न विचारधाराओं के उद्गम से नए मूल्यों के स्थिरीकरण और संक्रमण की चेतना का विकास होता है। वर्तमान युग म. सभ्यता और संस्कृति का इतना व्यापक प्रभाव है कि उसे किसी भी प्रकार अलग करके नहीं देखा जा सकता। इसके साथ ही भौतिकवादी और अर्थवादी चेतना ने हमारे युगबोध और जीवन मूल्यों को झकझोर डाला है। विज्ञान और अति औद्योगिकरण के प्रसार ने मानवीय, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को विघटित कर डाला है। यह मूल्य विघटन की प्रक्रिया अपने संक्रमण काल से निकलती हुई धार्मिक, नैतिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय एवं पारिवारिक मूल्यों म. भी दिखाई देती है।

व्यक्तिवादिता के पाश्चात्य-दर्शन ने मूल्य विघटन की वृद्धि म. व्यापक योगदान दिया है, क्योंकि व्यक्तिवादिता के पार्श्व म. सामान्यतः मनुष्य म. दो प्रवृतियां अर्थ-चेतना और काम-चेतना का विकास हो चुका है, जिसके कारण आर्थिक